

कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर द्वारा प्रदर्शित कम दाब की बूंद-बूंद सिंचाई पद्धति से लाभान्वित हो रहे सब्जी उत्पादक किसान

सम्पूर्ण विश्व का लगभग 1 प्रतिशत शुद्ध जल हमारे देश में उपलब्ध है। इस 1 प्रतिशत शुद्ध जल का 82 से 85 प्रतिशत जल का उपयोग कृषि सिंचाई हेतु किया जाता है तथा शेष जल का अन्य कार्यों हेतु उपयोग होता है। इस हेतु 82 से 85 प्रतिशत शुद्ध जल से हमारे देश की कुल खेती योग्य भूमि का लगभग 35 प्रतिशत क्षेत्रफल पर सिंचाई की जाती है तथा सिंचाई का मुख्य स्रोत नहरें हैं एवं कूड़ विधि द्वारा खेतों की सिंचाई की जाती है जिसके कारण जल की अधिक हानि होती है। इसलिए हमारे देश के कृषि वैज्ञानिकों ने फव्वारा एवं बूंद-बूंद सिंचाई प्रणालियां विकसित की लेकिन इन प्रणालियों की लागत अधिक होने एवं इन प्रणालियों के संचालन की लागत अधिक होने के कारण किसान इन सिंचाई प्रणालियों को कम अपनाता है तथा राजस्थान के उत्तर पश्चिमी क्षेत्र में कम वर्षा एवं भूमिगत जलस्तर में आ रही दिनों-दिन कमी को ध्यान में रखते हुए कुलपति डॉ. बलराज सिंह कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर द्वारा कम दबाव सिंचाई प्रणाली विकसित कर प्रसार शिक्षा, निदेशालय कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर एवं भारतीय कृषि अनुसंधान, नई दिल्ली के अन्तर्गत संचालित फार्मर फर्स्ट परियोजना के माध्यम से ग्राम मणार्ई में किसानों के खेतों पर इस तकनीकी के सफल प्रदर्शन किये गये है तथा इस तकनीकी के परिणामों को देखते हुए अन्य किसानों में भी अपनाने की इच्छा जागृत हुई है। इस तकनीकी में 1000 लीटर के एक प्लास्टिक टैंक को 10 से 12 फीट की उंचाई पर लगाया जाता है तथा उस टैंक से 1000 मीटर इन लाइन ड्रिप की स्थापना कर 2000 वर्ग मीटर क्षेत्रफल पर आसानी से सिंचाई की जा सकती है। टैंक की उंचाई 10 से 12 फीट होने के कारण लगभग 1.5 से 2 LPH तक दबाव उत्पन्न होता है जिसको लगभग 50 मीटर की दूरी तक बनाये रखा जा सकता है तथा इस तकनीकी से जल उपयोग दक्षता बूंद-बूंद सिंचाई प्रणाली से अधिक पाई गई है एवं कम दबाव सिंचाई प्रणाली का संचालन शून्य लागत पर आधारित है क्योंकि 1 हजार लीटर का टैंक 10 से 12 फीट की उंचाई पर होने के कारण स्वतः ही दबाव उत्पन्न होता है जबकी बूंद-बूंद सिंचाई प्रणाली को संचालित करने हेतु बिजली की आवश्यकता अधिक होती है।

